आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853113
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13 विक्रम संवत् 2069
दयानन्दाब्द 189

॥ ओ३म ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का सामाहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 9 अंक : 42 रोहतक, 7 अप्रैल, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

महर्षि के जीवन की कुछ उपयोगी बातें

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

बरेली में बहुत दिनों तक व्याख्यान-वारि-वर्षा करने के पश्चात् स्वामी दयानन्द जी आश्विन सदी 4 सं० 1936 तदनुसार सन् 1879 को शाहजहाँपुर पधारे। विज्ञापनों द्वारा सबको विदित कर दिया कि धर्म-प्रेमी जन नियत समय पर आकर व्याख्यान श्रवण करें और लाभ उठावें। जिनको प्रश्न पूछने हों, वे स्वामी जी के पास आकर अपनी शङ्काओं का समाधान करायें और उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार कई बिन्दुओं पर व्याख्यान दिये।

(1) सच्चा धर्म एक ही है— शाहजहाँपुर में सत्य पर व्याख्यान देते हुये स्वामी जी ने कहा, ''संसार में अनेक मत फैल रहे हैं। पन्थाइयों पर विश्वास कर जिज्ञासु के लिए सत्य का जानना कठिन है। जिससे पूछो वही अपने पन्थ को सच्चा और दूसरों को झूठा बताता है। इस पर स्वामी जी ने दृष्टान्त दिया कि एक जिज्ञासु किसी तत्त्वदर्शी पण्डित के पास जाकर कहने लगा कि महाराज! मुझे वह सच्चा धर्म बताइए, जिसके आराधन से मेरा कल्याण हो, मुझे परमधाम की उपलब्धि हो।''

तत्त्वदर्शी महात्मा ने कहा—चलो आपको सद्धर्म का बोध करायें। वे उसे एक मतवादी के पास ले गये। उन्होंने उस मतवादी से पूछा कि—सत्य-धर्म कौनसा है? उस पन्थाई पुरुष ने अपने मत की मुक्तकंठ से प्रशंसा की और दूसरे मतों की निन्दा की। इस प्रकार वह जिज्ञासु सभी मतवादियों के पास गया। सभी अपने उठने-बैठने की रीति को, अपनी उपासना पद्धति को और अपने धर्म मन्दिरों को धर्म वर्णन करते रहे। प्रत्येक ने अपने ही तीर्थों का यशगान किया। अपनी ही देव-मूर्तियों को उत्तम बताया। अपने ही धर्मचिह्नों को, बहिरङ्ग साधनों को और अपने ही महापुरुषों के वाक्यों को 'धर्म' प्रदर्शित किया और अपने से भिन्न मतों की प्रत्येक बात की भरपेट निन्दा की।

प्रत्येक मतवादी की नवीन धारणा, नवीन पद्धति, नूतन धर्मचिह्न, नई मूर्त्तियाँ और भिन्न-भिन्न तीर्थ देख व सुनकर, उस जिज्ञासु का जी घबरा उठा। मतवादियों के सघन निविड़ वन में फँसकर वह दिशामूढ़ हो गया। अन्त में वह तत्त्वदर्शी महात्मा की सेवा में उपस्थित होकर सच्चे धर्म की जिज्ञासा करने लगा। उस महात्मा ने जिज्ञासु से कहा, सत्य वह है जिस पर सब की एक-सी साक्षी हो, जिसके सब कर्मों को सब मत-वादी स्वीकार करें, वही सच्चा धर्म है। उसी को मानो। किसी एक मत के आडम्बर में न फँसो। जिस धर्म में एक परमेश्वर पर विश्वास और उसकी उपासना, जैसा भाव और ज्ञान भीतर हो, उसी को वाणी द्वारा प्रकाश करना और उसी के अनुसार आचरण करना, जितेन्द्रिय रहना, किसी के अधिकार और वस्तु को न छीनना और निर्बलों व दीनों पर दया करना बताया जाता है, वही धर्म सर्वोत्तम है। ऐसा धर्म केवल वैदिक धर्म ही है और यही धर्म कल्याणकारी एवं मोक्षदाता है।

(2) वेदों की पुनः स्थापना— एक दिन लक्ष्मण शास्त्री स्वामी जी के पास जाकर शास्त्रार्थ करने लगे। शास्त्रार्थ का विषय मूर्ति-पूजन था। स्वामी जी ने शास्त्री जी को कहा कि अपने पक्ष के पोषण में आप कोई वेद का प्रमाण उपस्थित कीजिये। शास्त्री महाशय ने कहा कि वेद का प्रमाण कहाँ से दूँ? वेद तो शंखासुर ने हरण कर लिए हैं। स्वामी जी ने तत्काल वेद हाथ में उठाकर कहा, पण्डित जी आपके आलस्य और प्रमाद रूपी शंखासुर का वध करके ये वेद मैंने जर्मनी से मँगाये हैं। लीजिए इनमें से खोजकर कोई प्रमाण निकालिए। उस समय सारी सभा हास्यरस में लोट-पोट हो गई। पण्डित जी ने मौन साधन ही अच्छा समझा।

(3) निर्भीक संन्यासी— महर्षि जी एक निर्भीक संन्यासी थे। कितना भी बड़ा मनुष्य, कोई क्यों न हो, यदि वह कोई दबाव की बात कह बैठता है तो स्वामी जी तुरन्त करारा उत्तर देकर उसका मुंह बन्द कर देते। एक दिन डिप्टी-कलेक्टर, अली जान महाशय उस मार्ग से निकले जहाँ स्वामी जी व्याख्यान दिया करते थे। डिप्टी महाशय ने कहा कि पण्डित जी! अपने व्याख्यान में कुछ संभलकर बोला कीजिए। स्वामी जी ने तत्काल उत्तर दिया कि कोई भय की बात नहीं है, अब राज्य अंग्रेजी है, औरंगजेबी नहीं।

(4) मितव्ययिता के प्रबल समर्थक— स्वामी जी को मितव्ययिता का भी सदा ध्यान रहता था। वे व्यर्थ व्यय के बड़े विरोधी थे। धन के सदुपयोग की सब को शिक्षा दिया करते थे। स्वामी जी को व्याख्यान-स्थान पर पहुंचाने के लिये जो सज्जन गाड़ी भेजा करता था, वह एक दिन अपनी गाड़ी न भेज सका। किराये की गाड़ी स्वामी जी के निवास स्थान पर आ गई। स्वामी जी ने उस गाड़ी को देखकर कहा, ''आप किराये की गाड़ी क्यों लाये हैं? मुझे गाड़ी में बैठने का कोई व्यसन नहीं है। आने-जाने में अधिक समय न व्यय हो जाए इसलिए मैं गाड़ी में बैठता हूँ, वैसे तो मुझे पैरों चलने में ही आनन्द आता है।''

पण्डित भीमसेन जी एक दिन बाजार से भोजन-सामग्री लिवा लाए। स्वामी जी ने भोज्य-पदार्थों का निरीक्षण कर पण्डित जी को कहा, ''आटे आदि के दाम आप से अधिक लिया गया है। ऐसा जान पड़ता है कि आपने भावों की पूछताछ कुछ भी नहीं की। पदार्थ भी उत्तम कोटि के नहीं हैं। भाई, धन एक उपयोग की वस्तु है। यह बड़े परिश्रम से प्राप्त होता है, इसलिये एक पैसे के व्यय में भी सावधान रहना चाहिए।''

(5) समय को एक बहुमूल्य वस्तु मानते थे— स्वामी जी समय को एक बहुमूल्य वस्तु मानते थे। उन्होंने दिन-रात के सारे पल अपने लिये नियम के तार में पिरो ही रखे थे, परन्तु कर्मचारियों को भी व्यर्थ में समय बिताने नहीं देते थे। एक दिन उनके लेखक कार्य करने के लिए समय पर समुद्यत न हो सके। वे कोई आधा घण्टा देर करके काम पर आये। स्वामी जी ने उन्हें उपदेश देते हुये कहा, ''हमारे देश के लोग समय का महत्त्व नहीं जानते। नियमबद्ध कार्य करना इनके लिए दुष्कर कर्म है। प्रातः से सायं पर्यन्त इनके सारे काम अनियमित होते हैं। समय का व्यर्थ खोना इनकी अस्त-व्यस्त अवस्था का एक भारी कारण है। समय कितना मूल्यवान् है, इसका ज्ञान उस समय होता है जब किसी का मरणासन्न प्रिय बन्धु शय्या पर पड़ा होता है और वैद्य आकर कहता है कि यदि पाँच पल पहले मुझे बुलाया होता तो मैं इसे मरने न देता। चाहे सहस्रों रुपये व्यय कर डालो, पर अब इसकी आँख नहीं खुल सकती।''

(6) गोरक्षा होना बहुत जरूरी है— स्वामी जी कुछ दिन शाहजहाँपुर ठहरकर, लखनऊ होते हुये आश्विन सुदी 10 सं० 1936 को फर्रुखाबाद

शेष पृष्ठ 2 पर....

शिक्षा ही सर्वोत्तम धन एवं दान है

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्या-मन्तव्यप्रकाश प्रकरण में शिक्षा की परिभाषा दी है। महर्षि लिखते हैं कि **'शिक्षा'** जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें उसको शिक्षा कहते हैं। मानव जीवन में शिक्षा सतत चलने वाली प्रक्रिया है तथा मनुष्य अन्त समय तक कुछ न कुछ नया सीखता रहता है। शिक्षा अनन्त है इसकी कोई सीमा नहीं होती। महर्षि की उपरोक्त परिभाषा से यह स्पष्ट सन्देश मिलता है कि मनुष्य सद्शिक्षा से ही मनुष्य कहलाता है। सद्गुरु द्वारा दी गई शिक्षा से महामूर्ख भी पण्डित बन जाता है। पंचतन्त्र में कहानी है कि भारतवर्ष के दक्षिण प्रदेश में महिलारोप्य नगर के राजा अमरशक्ति के तीन महामूर्ख पुत्रों को 80 वर्षीय वृद्ध पण्डित विष्णुशर्मा ने छः मास की कालावधि में प्रतिज्ञानुसार शिक्षित और राजनीति-निपुण बना दिया। शिक्षा मनुष्य के मस्तिष्क को विकसित करती है, बुद्धि बल को बढ़ाती है, मनोबल को बढ़ाकर विषम परिस्थितियों में भी उसे निराश नहीं होने देती। विद्या का बड़ा महत्त्व है। संस्कृत श्लोक—**'रूप-यौवनसम्पन्ना विशाल कुलसंभवाः। विद्याहीनाः न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुका॥'** कोई भी मनुष्य चाहे वह ऊँचे वंश में उत्पन्न हुआ हो, रूप-यौवन और सम्पत्ति से युक्त हो, विद्या के बिना वह वैसे ही शोभा नहीं पाता, जैसे गंधविहीन किंशुक (सेमर) का फूल शोभा नहीं पाता है। अतः विद्या मानव का सर्वांगीण विकास कर उसका जीवन सुखमय बनाती है।

विद्या का दान अक्षय दान है—**'सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते'** यजुर्वेद में कहा है कि संसार के सब दानों से वेदविद्या का दान अतिश्रेष्ठ है। एक संस्कृत श्लोक में कहा है—**'अन्नदानं परं दानं, विद्यादानमतः परम्। अन्नेन क्षणिका तृप्तिर् यावज्जीवं च विद्यया॥'** अन्नदान को श्रेष्ठ दान कहा है, क्योंकि अन्नदान से भूख की तृप्ति होती है। विद्यादान इससे भी श्रेष्ठ है, क्योंकि विद्या से जब तक जीवित रहते हैं, तब तक तृप्ति होती रहती है। भोजन, वस्त्र, धन, यहाँ तक कि भूमिदान भी कुछ समय की तुष्टि करते हैं तथा ये सब नष्ट हो जाते हैं परन्तु विद्या जीवन पर्यन्त साथ देती है। विद्या अनुपम एवं सर्वश्रेष्ठ धन है—**'न चौरहार्य न च राजहार्य न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि। व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्या-धनं सर्वधनं प्रधानम्॥'** विद्या धन को न चोर चुरा सकता है, न राजा छीन सकता है, न भाई इसे बांट सकते हैं, न इससे भार लगता है। विद्या धन व्यय करने से बढ़ता है और व्यय नहीं करने पर क्षीण होता है। अतः विद्या धन को ही सबसे प्रधान धन माना गया है। इसी से यश मिलता है। विद्या मनुष्य की परम मित्र होती है। विपरीत समय में सब मित्र-बन्धु भी साथ छोड़ देते हैं, परन्तु विद्या ऐसे संकट काल में भी मनुष्य की मित्र बन सहायक होती है। कहा है—**'विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्र गृहेषु च। व्याधितस्योषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च॥'** प्रवास में अर्थात् अनजान व अज्ञात स्थान पर विद्या मित्र होती है। घर में मनुष्य की स्त्री मित्र होती है, रोगी की मित्र औषधि होती है और मृतक का मित्र धर्म होता है। जिस प्रकार अन्धे व्यक्ति को रंगों का ज्ञान नहीं होता, उसी प्रकार विद्याहीन व्यक्ति को वेदशास्त्रों का ज्ञान नहीं होता। विद्या ही मनुष्य की शोभा है, विद्या ही मनुष्य का अत्यन्त गुप्त धन है, विद्या ही मानव को भोग्यपदार्थ यश और सुख देने वाली है, विद्या ही गुरुओं का गुरु है। विदेश यात्रा में विद्या ही कुटुम्बिजनों के समान सहायक होती है। विद्या ही सबसे बड़ा देवता है। राजाओं और विद्वानों की सभा में विद्या का ही आदर सम्मान होता है। अतः बिना विद्या मनुष्य पशु के तुल्य है।

विद्यार्थी जीवन जिसे वेद में ब्रह्मचर्य आश्रम भी कहा है, विद्या अर्जन का समय होता है। प्रायः मानव 5 या 6 वर्ष की आयु से लेकर लगभग 25 वर्ष तक विद्या ग्रहण करता है। मनुष्य जीवन का यही वक्त उसके भावी जीवन के निर्माण का समय होता है। यही शिक्षा उसे आजीवन स्मरण भी रहती है। बाल्यकाल और प्रौढ़ावस्था की बातें चिर-स्मरणीय नहीं होती। अपवाद स्वरूप महर्षि दयानन्द 36 वर्ष की आयु में गुरुविरजानन्द जी से मथुरा में शिक्षा ग्रहण कर आजीवन उसको नहीं भूले थे और परोपकार में लगे रहे। शिक्षा ग्रहण करते समय उन्होंने अनेक कष्ट भी सहे। एक कहावत है—**'झखत विद्या, पचत खेती'** विद्या झखने से, बार-बार पढ़ने से, रटने से और घोखने से आती है। विद्या परिश्रम बिना नहीं मिलती। पुराने समय में विद्यार्थी पढ़ते समय अपनी शिखा को छत के साथ डोरी से बांध लेते थे ताकि नींद की झपकी आने पर झटका लगे और आंख खुल जाए। बार-बार उठकर ठण्डे पानी से आंखें धोना भी नींद को दूर भगाता है। भाव यह है कि विद्या सहज प्राप्त नहीं होती। कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। संस्कृत श्लोक—**'सुखार्थी वा त्यजेत् विद्यां, विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्। सुखार्थिनः कुतो विद्यां, कुतो विद्यार्थिनः सुखम्॥'** सुख चाहने वाला जो परिश्रम नहीं करता, विद्या का त्याग दे और जो विद्या को ग्रहण करना चाहता है सुख-चैन आराम को त्याग दे। क्योंकि सुख चाहने वाले को विद्या कहाँ? और विद्या चाहने वाले को सुख कहाँ? अतः विद्यार्थी को बड़ी श्रद्धा, लग्न व चेष्टा से विद्या ग्रहण करनी चाहिए। विद्या ही मनुष्य को धैर्यवान्, गुणवान्, बुद्धिमान् बनाती है। शिक्षा स्वाभिमान को जागृत करती है। विद्यावान् सुख में सुखी और दुःख में दुःखी न रहकर सदैव समरस रहता है।

महर्षि के जीवन की कुछ उपयोगी.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

पधारे। इस बार स्वामी जी ने लाला कालीचरण के उद्यान में आसन लगाया। स्वामी जी यहाँ प्रतिदिन भाषण देते और सहस्त्रों मनुष्य सुनने आते। कलेक्टर आदि राज-कर्मचारी भी सम्मिलित हुआ करते और अत्यन्त प्रसन्न होते। उनके भाषणों का प्रभाव वर्णनातीत होता था। एक भाषण में गो-रक्षा के लाभ वर्णन करते हुए स्वामी जी ने कहा, ''गोहत्या से इतनी हानि हो रही है, परन्तु खेद है कि राजपुरुष इस पर कुछ भी ध्यान नहीं देते। यह दोष अधिक हमारा अपना है। हम में एकता का सर्वथा अभाव है। यदि मिलकर गोवध बन्द कराने का निवेदन करें, तो क्या नहीं हो सकता? जो लोग गो-दान करते हैं वे भी हानि-लाभ को नहीं सोचते। भोले-भाले भाई समझ लेते हैं कि गो-संकल्प करने से ही बैतरणी पार हो जायेंगे। वे तरना मान लेते हैं और गो-पुरोहित देवता के आँगन में खूंटे से बंधी रहती है। बहुत से ऐसे भी कुल-कपूत हैं जो तुरन्त उसे कसाई के हाथ बेच डालते हैं।''

(7) दान समीपस्थ को पहले देना चाहिये—एक दिन, दान पर बोलते हुये स्वामी जी ने कहा, ''अन्न-जल का दान कोई भी भूखा-प्यासा मिले उसे दे देना चाहिये। ऐसा दान पहले अपने दीन-दुःखी पड़ोसी को देना चाहिए। पास के रहने वाले का दरिद्र दूर करने में सच्ची अनुकम्पा और उदारता का प्रकाश होता है। इससे वाह-वाह नहीं मिलती, इसलिये अभिमान को भी अवकाश नहीं मिलता।''

(8) खण्डन क्यों करता हूँ—स्वामी जी ने एक दिन वर्णन किया, अनेक जन कहते हैं कि आपके खण्डन-परक व्याख्यानों से तो लोगों को घबराहट उत्पन्न हो जाती है। उनके हृदय भड़क उठते हैं, इसका परिणाम शुभ कैसे होगा? भाई, जब रोग दूर होने में नहीं आया करता तो अच्छे वैद्य लोग, देर के बढ़े दोषों को शान्त करने और मल को बाहर निकालने के लिए विरेचक औषधियाँ दिया करते हैं। विरेचक औषध पहले पहल घबराहट उत्पन्न करती है, व्याकुलता लाती है, कभी-कभी उससे मुँह भी मचलने लग जाता है। परन्तु जब विरेचन होकर कुपित दोष शान्त हो जाते हैं, तब प्रसन्नता होती है। धीरे-धीरे वास्तविक पुष्टि प्राप्त हो जाती है। आर्य जाति में अनेक कुरीतियों के दोष और मिथ्या मन्तव्यों के मल बढ़ गये हैं। उनके कारण यह इतनी रुग्ण हो गई है कि लोग इसकी आयु को उंगलियों पर गिनने लगे हैं।

हमारे उपदेश, आज विरेचक औषध की भाँति, घबराहट अवश्य लाते हैं, परन्तु हैं वे जातीय शरीर के संशोधन और आरोग्यप्रद। वर्तमान आर्य्य सन्तान हमें चाहे जो कहे परन्तु भारत की भावी सन्तति हमारे धर्म सुधार को और हमारे जातीय संस्कार को अवश्यमेव महत्त्व की दृष्टि से देखेगी। हम लोगों की आत्मिक और मानसिक नीरोगता के लिए जो कुरीतियों का खण्डन करते हैं, वह सब कुछ हित-भावना से किया जाता है।

* ओ३म् *

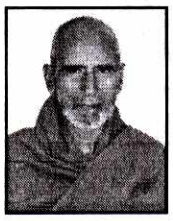

मुमुक्षु के लक्षण

-: वेद-मन्त्र :-

इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन।
नरो हव्येभिरीडते सबाध अग्निरग्रमुषसामशोचि॥ 8॥ 70॥

[अग्नि:] अपने को आगे प्राप्त करने वाला, उन्नति पथ पर चलने वाला यह मुमुक्षु [राजा] = बड़े नियमित (regulated) जीवन वाला होता है। शरीर में जितनी भी क्रियायें 'क्षरपुरुष'=प्राकृतिक शरीर से सम्बद्ध हैं—खाना, पीना, सोना, जागना—वे सब उसकी बड़े नियम से चलती हैं। सूर्य चन्द्र की गति के समान समय पर होती हैं। (2) [अर्य:] यह स्वामी होता है। किनका? अपनी इन्द्रियों का। इन्द्रियों के वशीभूत होकर यह कभी कोई कार्य नहीं करता। इन्द्रियां उसकी उन्नति का साधन होती हुई उसकी दास होती हैं। न कि मालिक। प्राकृतिक जीवन में उसकी क्रियायें नियमित होती हैं, आध्यात्मिक जीवन में संयत।

इतना उत्कृष्ट जीवन वाला होता हुआ भी वह नम्र होता है और वस्तुत: (3) [नमोभि:]= इन नम्रताओं से 'समिन्धे'=और भी अधिक चमकता है। (4) यह मुमुक्षु वह है (यस्य) जिसका [प्रतीकं]=अंग-प्रत्यंग 'घृतेन' =दीप्ति से [आहुतम्]=आहुत होता है। इसका अंग-प्रत्यंग एक विशेष प्रकार की चमक वाला होता है। उसके मन की शान्ति चेहरे पर ज्योति के रूप में प्रकट होती है।

(5) इस प्रकार अपने जीवन को बनाकर ये मुमुक्षु [नर:]= औरों को आगे ले चलने वाला बनता है और इस लोकहित की प्रवृत्ति में (6) [हवेभि:] =तन, मन, धन की आहुतियों से ये उस प्रभु की 'ईडते'=उपासना करते हैं। इस कार्य में ये (7) [सबाध:]= बलयुक्त होता है। इस लोकहित के कार्य को यह ढिलमिलपने से न करके शक्तिशाली बनकर करता है। (8) यह अग्नि 'आ-उषसाम् अग्रे'=सदा उष:काल के अग्रभाग में बहुत तड़के 'अशोचि'=अपनी गत दिन की कमियों का पश्चात्ताप करता है और आगे से उनके न दुहराने के दृढ़ निश्चय से अपने को पवित्र व दीप्त बनाता है।

भावार्थ—मुमुक्षु को नियमित व संयत शान्त जीवन वाला होकर लोकहित के द्वारा प्रभु की उपासना में निरत रहना चाहिए। **—आचार्य बलदेव**

आर्य महासम्मेलन महाशिवरात्रि पर्व सम्पन्न

आर्यसमाज घोघड़िया जिला जीन्द द्वारा आर्य महासम्मेलन बड़ी धूमधाम से महाशिवरात्रि पर्व पर ऋषि बोध-दिवस के रूप में आर्यसमाज मन्दिर घोघड़िया में मनाया गया। दिनांक 7 मार्च, 2013 से 10 मार्च 2013 तक सामवेद पारायण यज्ञ चला। गुरुकुल कालवा के वेदपाठी ब्र० मुनीष व भीम ने सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न करवाया। प्रात: 10 बजे पूर्णाहुति हुई। उसी समय आर्य महासम्मेलन जिसमें मुख्य नारी सशक्तीकरण, भ्रूणहत्या, गोरक्षा, नशाबन्दी व समाज में फैली कुरीतियों के भिन्न-भिन्न सम्मेलनों पर चर्चा हुई। सर्वप्रथम आर्य श्री कुलदीप दूहन व उनकी धर्मपत्नी कमलेश आर्या ने मुख्यद्वार का उद्घाटन किया जो उन्होंने स्वयं तैयार करवाया था। तत्पश्चात् सरपंच मनजीत ग्राम पंचायत घोघड़िया ने सेवक कक्ष का उद्घाटन किया।

मुख्यवक्ता डॉ० दर्शना ने नारी सशक्तिकरण व भ्रूणहत्या पर सारगर्भित प्रवचन दिये। सन्त वजीरानन्द ने समाज में फैले दुर्व्यसनों जैसे—शराब, ताश खेलना, चौपड़ खेलना आदि-आदि उपरोक्त विषय पर एक गीत भी सुनाया। दूसरे मुख्यवक्ता प्रिंसिपल ईश्वरसिंह श्योकन्द राजीव गाँधी महाविद्यालय उचाना ने आर्यसमाज कैसे आगे बढ़े, स्त्रीशिक्षा को कैसे आगे बढ़ाया जावे आदि-आदि विषयों पर गंभीर चर्चा की। सभी मुख्य वक्ताओं और अतिथियों को शाल ओढ़ाकर व स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया गया। प्रधान रायसिंह आर्य ने सबका धन्यवाद किया। मंच संचालन का कार्य दिलबाग सिंह शास्त्री ने बहुत ही सुन्दर ढंग से किया। प्रात: 10 बजे से 2 बजे तक सभा का कार्यक्रम शान्तिपाठ व जयघोष के साथ सम्पन्न हुआ। सभी आर्यजनों व बालक-बालिकाओं को प्रीतिभोज कराया गया। **—रायसिंह आर्य**

आर्यवीर दल हरियाणा की ओर से पूज्य स्वामी बलेश्वरानन्द जी को प्रदत्त प्रशस्ति-पत्र एवं विशेष सम्मान

स्वामी बलेश्वरानन्द सरस्वती जी का सम्मान करते हुए सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रचार मन्त्री चन्द्रदेव (चाँदसिंह आर्य)।

दिनांक 7 मार्च, 2013 गुरुवार को प्रतिवर्ष की भांति श्रद्धेय पूज्य स्वामी बलेश्वरानन्द जी (उत्तराधिकारी गुरु ब्रह्मानन्द आश्रम बणी, पुण्डरी, कैथल) का समर्पण दिवस आश्रम की यज्ञशाला में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पूज्य स्वामी जी ने 7 मार्च 1966 को निज गृह त्यागकर गुरु ब्रह्मानन्द जी को आत्म-समर्पण किया था, तब से निरन्तर पूज्य स्वामी जी महाराज गुरु जी के बताये वैदिक पथ पर अग्रसर हो अहर्निश सेवा, परोपकार, यज्ञ एवं राष्ट्रहित के कार्यों में अनवरत रूप से संलग्न हैं।

इस भव्य कार्यक्रम का शुभारम्भ आयुष्काम यज्ञानुष्ठान से किया गया। तदनन्तर गुरु ब्रह्मानन्द जी का जीवन गाथा एवं इक योगी वेदों वाला नाम से कैसेट का लोकार्पण गणमान्य प्रतिष्ठित आगन्तुक अतिथियों द्वारा किया गया। हजारों की संख्या में उपस्थित माताओं, बहनों, सज्जनों एवे आबाल-वृद्धों के सम्मुख उस कैसेट का चार स्क्रीनों पर रोमाञ्चक प्रदर्शन हुआ, जिसे सभी ने मन्त्रमुग्ध होकर देखा, सुना एवं उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस गरिमामय अवसर पर आचार्य श्री चन्द्रदेव जी (प्रचारमन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल) की ओर से पूज्यपाद स्वामी बलेश्वरानन्द जी को शाल ओढाकर एवं प्रशस्ति-पत्र और रजत पदक प्रदान कर उनके द्वारा प्रदत्त प्रचार-वाहन हेतु दिये गये एक लाख रुपये के सहयोग हेतु कृतज्ञता ज्ञापन निमित्त अभिनन्दन किया गया।

अन्त में इस कार्यक्रम के यशस्वी, कुशल संयोजक भाई श्री राजपाल सिंह (बहादुर) जी ने सभी उपस्थित श्रोताओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम समापन के बाद सभी ने प्रसन्नतापूर्वक ऋषिलंगर ग्रहण किया।

इस सफल आयोजन में मंच पर उपस्थित थे—सर्वश्री स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, संचालक पाणिनि आर्ष गुरुकुल नली (करनाल), आचार्य चन्द्रदेव जी, प्रचारमन्त्री सार्वदेशिक आर्यवीर दल, महाशय श्री जयपाल आर्य भजनोपदेशक यूनिसपुर (करनाल), पं० ज्ञानचन्द शास्त्री (भिवानी), श्रीमती उमा खन्ना, प्राचार्या गुरु ब्रह्मानन्द वरिष्ठ माध्यमिक पब्लिक स्कूल पुण्डरी (कैथल)।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सकरावा जिला कन्नौज (उ.प्र.) का वार्षिकोत्सव दिनांक 5,6,7 मार्च 2013 को धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्ररक्षा, गऊरक्षा, स्त्रीशिक्षा, पाखण्ड-खण्डन, चरित्र-निर्माण सम्मेलन किये गये। उत्सव में आर्य विद्वान् कवि पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धांताचार्य पलवल (हरयाणा), आचार्य चन्द्रपाल आर्य गाजियाबाद (उ.प्र.), श्रीमती क्षमारानी इटावा (उ.प्र.), श्री परसराम आर्य, श्री तुलाराम आर्य (कन्नौज) ने अपने भजनों व उपदेशों से हजारों धर्मप्रेमियों का मार्गदर्शन किया। जयदेव के भजनों की भारी प्रशंसा हुई। शान्तिपाठ के पश्चात् उत्सव का समापन किया गया।

—आदित्य प्रकाश आर्य, मंत्री, आर्यसमाज सकरावा, जिला कन्नौज (उ.प्र.)

निर्वाचन

आर्यसमाज औरंगाबाद मितरौल जिला पलवल हरयाणा का चुनाव स्वामी श्रद्धानन्द जी की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

संरक्षक-श्री प्रहलादसिंह आर्य, श्री अशोक आर्य व श्री डालचन्द आर्य प्रभाकर, प्रधान-श्री शंकरलाल भारद्वाज, उपप्रधान-बाबूलाल आर्य, मंत्री-ठाकुरलाल आर्य, उपमंत्री-जगवीर आर्य, कोषाध्यक्ष-श्यामसिंह आर्य 'वेदनिपुण', अंकेक्षक-गिर्राजसिंह आर्य, पुस्तकाध्यक्ष-राजवीर आर्य, प्रचारमन्त्री-कर्णसिंह आर्य, प्रवक्ता-श्री ओमवीर आर्य।

भारत में बुराइयों के बढ़ने के कारण

❑ सूबेदार करतारसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष, आ०प्र०स० हरयाणा

सृष्टि का नियम है कि बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता है। आज हमारे देश में बुराइयाँ बढ़ती जा रही हैं जिसके कारण देश में सुख-शान्ति का वातावरण प्रदूषित होता जा रहा है। आज देश में बुराइयों का प्रचार हवाई जहाज की गति से हो रहा है, परन्तु अच्छाइयों का प्रचार बैलगाड़ी की गति से हो रहा है। देश में बुराइयाँ नहीं बढ़ेंगी तो और क्या होगा?

आचार्य चाणक्य ने कहा है कि दुष्टों की दुष्टता ने संसार का इतना नुकसान नहीं किया जितना सज्जनों की निष्क्रिय उदासीनता ने किया है। **'कोई नृप होये हमें क्या हानि', 'जो करेगा सो भरेगा'** की मानसिकता निश्चित रूप से दुष्टों की दुष्टता से कहीं अधिक घातक एवं पीड़ावर्धक है।

महाभारत में लिखा है कि जब पापियों के पाप कर्मों को रोकने वाला कोई नहीं होता तो बहुत से लोग पाप कर्मों में प्रवृत्त हो जाते हैं।

हिन्दू कहलाने वालों की एक विशेषता रही है कि वे समाज की गलत बातों का विरोध नहीं करते, उन्हें लगता है कि यदि हम गलत का विरोध करेंगे तो हमें भी गलत काम छोड़ने पड़ेंगे।

भारतीय सच्ची वैदिक शिक्षा एवं संस्कृति के कारण हमारा देश जगद्गुरु कहलाया था परन्तु अब पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति से प्रभावित होकर हम भारतीयों के मन में भी यह मिथ्या धारणा बन गई है कि अधिकाधिक धन और धन से प्राप्त होने वाले साधनों को प्राप्त करके अपने समस्त दु:खों को दूर कर देंगे। यह मिथ्या धारणा ऐसी है जैसे कि अग्नि में अधिकाधिक घी डालकर अग्नि को शान्त करना, जब तक विदेशी शिक्षा से अधिक महत्त्व वैदिक शिक्षा को नहीं दिया जायेगा तब तक देश में सुख-शान्ति हो ही नहीं सकती है।

दौलत से रोटी मिल सकती है पर भूख नहीं मिल सकती।
दौलत से सुख मिल सकता है परन्तु शान्ति नहीं मिल सकती॥

लोभ को सभी मानसिक रोगों की जड़ माना गया है। सभी पापों की जड़ लोभ को कहा गया है। पाप का बाप लोभ कहलाता है। लोभ की कोई सीमा नहीं होती है। लोभ का पेट कभी नहीं भरता है। ज्यों-ज्यों धन-सम्पदा, सुख भोग के साधन-सुविधायें आदि बढ़ते जाते हैं, त्यों-त्यों मन लोभी और लालची होता जाता है। लोभी आदमी कभी परोपकार का काम नहीं करेगा। धर्म का लोभ, अधर्म एवं भ्रष्टाचार आदि का सबसे बड़ा कारण है। लोभ इंसान को अन्धा बना देता है। लोभ सबसे बड़ा दुर्गुण माना गया है। लोभी लालची आदमी सदा अशान्त, दु:खी और बेचैन रहता है।

हमारे देश में ज्यों-ज्यों धन का लालच बढ़ता रहा है, त्यों-त्यों पाप कर्मों में बढोतरी होती जा रही है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि जिस राजा का दण्ड विधान कमजोर होगा उस राज में सुख-शान्ति हो ही नहीं सकती है, बुराइयाँ भी बढ़ेंगी। आज हमारे राजनेताओं ने दण्ड विधान को वोट विधान एवं नोट विधान में बदल दिया है। इसी कारण आज हमारे देश में जनता में श्वानवृत्ति बढ़ती जा रही है। **'जैसा राजा वैसी प्रजा'** यह कहावत चरितार्थ होती जा रही है। जैसे कुत्ते को रोटी का टुकड़ा दिखा दो तो कुत्ता पूँछ हिलाता हुआ आदमी के पीछे-पीछे चल पड़ता है। इसी कारण आज आदमी को नोट दिखाकर राजनेता वोट प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं। राजनेताओं की इस व्यवस्था के कारण देश बर्बादी की ओर बढ़ता जा रहा है।

आज हमारे राजनेता लोग आर्यसमाजों में भी राजनीति का प्रवेश कराकर आर्यसमाजों को भी बर्बाद करने पर तुले हुए हैं। क्योंकि इन्हें विश्वास हो गया है कि हमारी गलत बातों का खण्डन आर्यसमाज ही कर सकता है। अत: आर्यसमाज में घुसकर अपने वोट विधान को सार्थक करना चाहते हैं। जिस धार्मिक संस्था में राजनीति प्रवेश कर जायेगी वह समाज भी बर्बाद हो जायेगी।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना परमात्मा द्वारा प्रदत्त वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये की थी जिसके कारण पूरे संसार में सुख-शान्ति पैदा की जा सकती है। अत: मेरी राजनेताओं से यही प्रार्थना है कि आर्यसमाजों में अपनी आधुनिक राजनीति न घुसेड़ें। सभी आर्य सदस्यों से भी यही प्रार्थना है कि राजनेताओं से न डरकर परमात्मा से अवश्य डरना चाहिये। पहले हम स्वयं आर्य बनें फिर दूसरों को भी आर्य बनायें केवल अपने नाम के आगे आर्य लिखकर आर्यसमाजों में आधुनिक राजनीति न घुसेड़ें। क्योंकि—

वेद का ही धर्म एक सच्चा सनातन धर्म है।
वेद के अनुकूल जो हो कर्म सच्चा कर्म है॥
वेद का ही सच्चा ज्ञान है भगवान् का।
हो सदा कल्याण इससे विश्व के इन्सान का॥

जीवन में प्राणायाम की उपयोगिता

❑ प्राध्या० जयप्रकाश आर्य, एम.ए. (हिन्दी, राज.शास्त्र), एम.एड.

'प्राणायाम' शब्द 'प्राण' और 'आयाम' दो शब्दों का योग है। प्राण का अर्थ सांस, जीवन, शक्ति, ऊर्जा है तथा आयाम का अर्थ विस्तार, लम्बाई, नियम, निरोध व नियन्त्रण है। इस प्राणायाम का अर्थ हुआ प्राणों=सांसों पर नियन्त्रण या विस्तार। बिना प्राण=सांस के शरीर शव कहलाता है। प्राण के द्वारा ही शरीर में जीवनी शक्ति का संचार होता है।

प्राणायाम प्राचीन ऋषियों की मानव समाज के लिए एक बहुमूल्य देन है। यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। योग्य मार्गदर्शक=गुरु के निर्देशन में इसका अभ्यास करने से मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। इसे श्रद्धापूर्वक करने से व्यक्ति का स्थूल शरीर निरोग, सूक्ष्म शरीर निर्मल और कारण शरीर उज्ज्वल होता है। इसका वर्णन महर्षि मनु ने मनुस्मृति में इस प्रकार किया है—

दह्यन्ते ध्यायमानानां धातूनां हि यथा मला:।
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषा: प्राणस्य निग्रहात्॥

इसका अर्थ है कि जिस प्रकार धातुओं के मैल अग्नि में तपाने से नष्ट हो जाते हैं उसी प्रकार प्राणायाम से सभी इन्द्रियों के=ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मेन्द्रियों के सभी दोष नष्ट होकर प्राण नियन्त्रण में हो जाते हैं। इतना ही नहीं योग के आठ अंगों में प्राणायाम का महत्त्वपूर्ण स्थान है। योग ऋषि पतञ्जलि ने योगदर्शन के साधनपाद के 52 सूत्र में **'तत: क्षीयते प्रकाशावरणम्'** के द्वारा बतलाया है कि प्राणायाम के नियमित अभ्यास से प्रकाशावरण क्षीण होने लगता है। इसका अभिप्राय यह है कि मन, बुद्धि, चित्त पर जो काम, क्रोध, लोभ, मोह रूप अज्ञान का आवरण होता है वह प्राणायाम से दूर हो जाता है तथा मनुष्य में अच्छे संस्कारों का प्रादुर्भाव होना प्रारम्भ हो जाता है।

युगपुरुष महर्षि दयानन्द जी ने 'सत्यार्थप्रकाश' के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं—'जब मनुष्य प्राणायाम करता है तब प्रतिक्षण उत्तरोत्तर काल में अशुद्धि का नाश और ज्ञान का प्रकाश होता जाता है। जब तक मुक्ति न हो तब तक उसके आत्मा का ज्ञान बबराबर बढ़ता जाता है।'' इसके साथ ही ''प्राण अपने वश में होने से मन और इन्द्रियाँ भी स्वाधीन होते हैं। बल-पुरुषार्थ बढ़कर बुद्धि तीव्र सूक्ष्म रूप हो जाती है जो कठिन और सूक्ष्म विषय को शीघ्र ग्रहण करती है।'' प्राणायाम जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर वेदों में भी प्रकाश डाला है। अथर्ववेद में प्राण से मैत्री व प्राण साधना का सन्देश कई मन्त्रों से मिलता है।

शेष पृष्ठ 5 पर....

बृहद् यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम सम्पन्न

दिनांक 16 मार्च 2013 को कंझावला (दिल्ली) में वैदिक यज्ञ व उपदेश सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में युवाओं के अतिरिक्त शिक्षाविद् उपस्थित हुए। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेदमित्र जी थे। ब्र० रेखा, ब्र० ज्योति द्वारा वेदपाठ किया गया। आचार्य जी ने सद्गृहस्थ पर बोलते हुए कहा कि जहाँ घर में संसाधनों की आवश्यकता है वहीं शुद्ध विचारों की उससे भी अधिक आवश्यकता है। राहुल आर्य द्वारा कार्यक्रम की उत्तम व्यवस्था की गई।

इसी प्रकार दिनांक 17 मार्च 2013 को शक्तिनगर रिवाड़ी में आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में बृहद् यज्ञ व वेदोपदेश कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्री महेन्द्र जी इंजीनियर द्वारा प्रतिवर्ष अपने पिता श्री स्व० मांगेराम आर्य अध्यापक की स्मृति में यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। कार्यक्रम में सैकड़ों देवियों के अतिरिक्त युवावर्ग भी उपस्थित था। आचार्य जी ने वैदिक उपासना की योग विद्या पर वैज्ञानिक विचार रखे। शंका-समाधान से अनेक विषयों पर गम्भीर विचार विमर्श हुआ।

—मनोज आर्य, पातञ्जल योगाश्रम, भऊ आर्यपुर रोहतक

विद्या-अविद्या एवं सम्भूति-असम्भूति

❑ महात्मा वेदपाल आर्य, आर्यसमाज थर्मल कालोनी, पानीपत

साधक साधना में प्रवेश पा लेने पर और ज्ञान स्वरूप उस निराकार, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, अविनाशी, परमपिता परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव को जान लेने पर भी विद्या-अविद्या, सम्भूति-असम्भूति को पूर्णरूपेण जाने बिना साधक का योगमार्ग पूरी तरह खुलता नहीं है। इन चारों का सूक्ष्मता से ज्ञान हुए बिना और चारों की अलग-अलग प्रयोग विधि जाने बिना, साधक भटकता-अटकता रहता है और इनका बोध किए बिना वह हठ करके आगे साधना में बढ़ने का प्रयास करता रहता है। परन्तु वह गिरता, फिसलता आगे नहीं बढ़ पाता है। पूर्ण पुरुषार्थ से भी जो लाभ मिलना होता है उससे वह वंचित रहता है। वास्तविक साधना पथ उसे हाथ नहीं आता है। अपनी साधना प्राप्ति के भ्रम में घूमता रहता है और कुछ काल उपरान्त इस मार्ग से उखड़ भी जाता है। उसे सब कुछ नीरस ही लगने लगता है और समझता है कि मेरा कोई मूल्यवान् पदार्थ गुम हो गया है। हाथ-पैर मारने पर भी उस स्थिति को प्राप्त नहीं कर पा रहा है, क्योंकि वह विद्या-अविद्या, सम्भूति-असम्भूति का बोध पूरी तरह नहीं कर पा रहा है। इन्हें जानने व प्रयोग विधि के ज्ञान का अभाव है। इसी अभाव में संन्यासी, योगी, वैरागी, साधक बनकर भी वैराग्य व प्रभुभक्ति के भरे गीतों को भी झूम-झूम कर गाते रहने पर भी, गेरुवे कपड़े धारण करने पर भी, ये देखे जाते हैं कि इनका जीवन भी जन-साधारणों की तरह ही जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कई-कई तो सामान्य जनों से भी निम्न स्तर का जीवन जी रहे हैं। उन्हें साधना का भ्रम रहता है परन्तु ये साधना से दूर हैं। यही तो आश्चर्य है कि वे दावा करते हैं—योगी, संन्यासी, साधक होने का। जनता उन्हें व उनके व्यवहार को देखकर योगमार्ग पर चलना ही छोड़ देती है।

इस विवेचन से यही अर्थ हुआ कि इस पथ का पथिक बनने के लिए जहाँ सबसे पहले साधना का अधिकारी बनने के लिए ईश्वर के स्वरूप को ज्ञान के स्तर पर अच्छी प्रकार से समझे और साथ में इस मार्ग में अपनी उन्नति के लिए विद्या—अविद्या, सम्भूति-असम्भूति—इन चारों ग्रन्थियों को समझकर इन्हें खोलने का पूर्ण पुरुषार्थ करें। ऐसा करने पर वे निश्चित रूप से अपने पथ पर आगे ही आगे बढ़ते जायेंगे। न वे फिसलेंगे, न लुढकेंगे, न अटकेंगे।

जो साधक सदैव अविद्या में रत है अर्थात् अविद्या की ही उपासना करता रहता है, वह गहन अन्धकार में जाता है और जो सदैव विद्या में ही रत है वह तो अविद्या वाले अंधकार से और भी अधिक गहन अन्धकार में चला जाता है। अत: इनका ज्ञान आवश्यक है इनके प्रयोग से पूर्व।

विद्या—वह 'तत्त्व-ज्ञान' जिससे साधक नि:श्रेयस कों, मुक्ति को प्राप्त होता है अर्थात् नितान्त दु:खों से छुटकारा पाकर स्थायी सुख को प्राप्त करना अर्थात् ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त करना 'विद्या' है। इस प्रकार 'विद्या' का अर्थ हुआ आध्यात्मिक-ज्ञान, अध्यात्म-विद्या। मुण्डक उपनिषद् के ऋषि अङ्गिरा जी के अनुसार नि:श्रेयस् को प्राप्त करना अर्थात् निराकार, सर्वज्ञ, अविनाशी परमपिता परमात्मा को प्राप्त करना उसका साक्षात्कार कराने वाली जो 'परा-विद्या' है उसे ही 'विद्या' कहते हैं। अर्थात् जो विद्या भौतिक न होकर, आध्यात्मिक ही हो वही ही 'विद्या' है।

अविद्या—वह ज्ञान जिससे साधक अभुदय को प्राप्त करे। अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद आदि को जानकर इनके अनुसार लौकिक सुख, सौभाग्य को प्राप्त करना अर्थात् भौतिक सुखों में ही रत रहना अविद्या है। मुण्डक उपनिषद् के ऋषि जी के अनुसार यह 'अविद्या' ही 'अपरा-विद्या' कहलाती है। अर्थात् जो आध्यात्मिक ज्ञान तो न हो परन्तु उससे भिन्न कोई ऐसा ज्ञान हो जो उस आध्यात्मिक ज्ञान का पूरक हो ऐसा ज्ञान, 'भौतिक-ज्ञान' अर्थात् अविद्या कहा जाता है।

इस प्रकार 'अविद्या' यानि विद्या का अभाव। परन्तु अभाव में तो कुछ हो ही नहीं सकता। कुछ है तो कुछ हो रहा है। अत: अविद्या का अभिप्राय विद्या का अभाव न होकर ही विद्या से कोई अन्य वस्तु होनी चाहिए जो विद्या के समान हो भी और उसकी पूरक भी हो, तो वह वस्तु 'कर्म' ही हो सकती है। क्योंकि विद्या (ज्ञान) के साथ-साथ वह वस्तु 'कर्म' ही हो सकती है। ज्ञान (विद्या) बिना कर्म अधूरा है और कर्म बिना ज्ञान अधूरा है। अत: विद्या का अर्थ हुआ 'ज्ञान' और अविद्या का अर्थ हुआ 'कर्म'। जब केवल कर्म ही किया जाता है अर्थात् ज्ञानशून्य होकर कर्म करते हैं तो गहन अन्धकार को प्राप्त होते हैं। जब केवल विद्या (आध्यात्मिक ज्ञान) में ही रत रहते हैं यानि कर्मविहीन होकर तो और भी अधिक गहन अंधकार को प्राप्त होते हैं।

जब केवल ज्ञान रहित कर्म क रते हैं तो अंधकार के गड्ढे को प्राप्त होते हैं और जब केवल कर्म रहित ज्ञान में रत रहते हैं तो कुएँ के अंधकार को प्राप्त होते हैं। इस दृष्टि से तो विद्या, अविद्या से अधिक अंधकार में ले जाने वाली केवल एक-एक की उपासना करने के कारण।

अब प्रश्न उपस्थित होता है कि ये दोनों त्याज्य हैं। दोनों ही अन्धकार को देने वाली हैं। नहीं ऐसा नहीं है। ऋषि-मुनियों, विद्वानों ने वेद के आधार पर साधक को सचेत किया है कि दोनों का समन्वय बनाकर चलना है। ज्ञान भी आवश्यक है और कर्म भी आवश्यक है। जो कर्म किया जाये वह ज्ञान सहित हो, बिना ज्ञान का कर्म दु:ख को बढ़ाने वाला होगा। ज्ञान के साथ कर्म भी जोड़ना होगा। अकेला ज्ञान बिना कर्म के ज्यादा दु:ख देने वाला होगा। जैसे एक साधक योग के आठों अंगों का पालन कर रहा है, कर्म कर रहा है, आसन पर बैठता है, धारणा बना रहा है आदि-आदि घंटों क्रियायें करता है और बाद में कहता है कुछ हाथ नहीं आ रहा, क्योंकि कर्म तो वह कर रहा है परन्तु ज्ञान नहीं है कि आसन कैसे सिद्ध होगा? धारणा का सम्पादन कैसे होगा? ईश्वर-प्रणिधान कैसे करना है? निदिध्यासन कैसे करना है? वर्षों बीत जाने पर भी कर्मफल कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। निराश होकर साधना से विमुख हो जाएगा। क्योंकि यह कर्म बिना ज्ञान के हो रहा है तो उचित फल कैसे मिले? पहले साधकों को ज्ञान करना होगा कि आसन कैसे लगाना है? धारणा कैसे बनानी है? आदि-आदि पूर्ण जानकारी लेकर क्रिया (कर्म) की जाएगी तो उसका फल अवश्य मिलेगा। कर्म ज्ञानपूर्वक करना चाहिए।

एक साधक योग के साधनों का ज्ञान पूर्ण रखता है। उनकी अच्छी प्रकार व्याख्या करता है। श्रोतागण में कीर्ति प्राप्त करता है, परन्तु क्रिया रूप कुछ नहीं कर रहा है। उसे योग के साधनों का कोई फल नहीं मिलेगा, क्योंकि वह बैठकर आसन नहीं लगाता, धारणा नहीं बनाता, कर्म कर नहीं रहा। इससे आसन सिद्ध नहीं होता है। वर्षों तक जैसा था वैसा ही रहता है। कर्म रहित ज्ञान निष्फल रहेगा। अत: ज्ञान कर्मपूर्वक करना चाहिए। इस प्रकार करने से साधक अपने उद्देश्य को लम्बे काल तक प्राप्त कर ही लेगा। अत: कर्म करना है, वह ज्ञान पूर्वक हो। ज्ञान करना है-वह कर्म पूर्वक हो। इन दोनों का आपस में समन्वय बनाकर पूर्ण पुरुषार्थ से उद्देश्य प्राप्ति में सफलता प्राप्त की जा सकती है—निश्चित रूप से। एक-एक की साधना, उपासना से कुछ नहीं होने वाला है। अन्त में अन्धकार में ही डुबकी लगती प्राप्त होगी। अत: साधक को गड्ढे और कुएं वाले अंधकार से पार होने के लिये दून दोनों विद्या (ज्ञान) अविद्या (कर्म) में समन्वय बनाना चाहिए और उद्देश्य में सफलता प्राप्त करना चाहिए।

एक लौकिक दृष्टान्त—जैसे एक व्यक्ति चाकू से फल काटता है, चाकू की धार पर हाथ का दबाव दे रहा है, फल पर चाकू टिकाकर-फल तो कटेगा नहीं, उल्टा हाथ जरूर कटेगा। इस समय वह कर्म कर रहा है, परन्तु बिना ज्ञान के हानि उठा रहा है। यदि वह धार वाला हिस्सा फल पर रखे, दूसरे तरफ के सिरे के भाग को हाथ से दबाएगा तो फल कटेगा, हाथ भी नहीं कटेगा। यह कार्य ज्ञानपूर्वक हुआ है। बिना ज्ञान के कर्म से हानि हुई। ज्ञानपूर्वक कर्म से उन्नति हो पाएगी। अत: विद्या (ज्ञान) अविद्या (कर्म) का समन्वय बनाकर उन्नति हो पाएगी। यही दर्शन, उपनिषद् और वेदों का सन्देश है।

जीवन में प्राणायाम की उपयोगिता.... पृष्ठ 4 का शेष....

ऋग्वेद में इसकी विस्तार से चर्चा की गई है। इतना ही नहीं इस पर गीता, रामायण, उपनिषद् के अतिरिक्त भारतीय वाङ्मय का बहुत बड़ा भाग इसकी महिमा का बखान कर रहा है। यहाँ तक कि प्राण को पिता, माता, आचार्य, भ्राता के अलंकारों से सुशोभित किया गया है। अत: इस आधार पर प्राणायाम की उपयोगिता बहुत बढ़ जाती है।

प्राणायाम से रक्त शुद्ध होने से शरीर के आन्तरिक अवयव शुद्ध हो जाते हैं जिससे तनाव व असंयम से छुटकारा मिल जाता है। इतना ही नहीं वात, पित्त, कफ की विषमता दूर हो जाती है। परिणाम स्वरूप मन पवित्र होकर संयमित हो जाता है जिससे मानव के स्वभाव में भी बहुत बड़ा परिवर्तन आ जाता है। इससे उसके हृदय में करुणा, मुदिता, दया, परोपकार जैसे सात्त्विक विचार उदित होते हैं। सात्त्विक विचारों के कारण वह ईमानदार, राष्ट्रभक्त तथा प्रभुभक्त बन जाता है। इतना ही नहीं प्राणायाम का श्रद्धा पूर्वक अभ्यास करने से व्यक्ति के चरित्र का भी विकास होता है। चरित्रवान व्यक्ति ही राष्ट्र व समाज को उन्नत कर सकता है।

सम्पर्क-प्रधान, आर्यसमाज, जवाहरनगर (पलवल) 09813491919

यज्ञ बसाता है

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

व्यक्ति हो, परिवार हो, विद्यालय हो या संगठन व समाज, यज्ञ सबको बसाता है, भलीभांति व्यवस्थित, संगठित, समृद्ध रखता है। यज्ञ पर बैठने से मन्त्र बोलने, सुनने, मनन करने से, अग्नि में आहुतियां डालने से जो सात्त्विक भावना बनती है, यज्ञ पर विद्वान् के संग से जो विचार परिवर्तन होता है उससे व्यक्ति का कल्याण होता है तथा वह बसता है। इसके अभाव में उद्दण्डता चञ्चलता, स्वार्थ आदि उजाड़ने वाले दुर्गुणों का शिकार होता है। परिवार, विद्यालय, संगठन, समाज आदि फूट के कारण उजड़ते हैं। यज्ञ पर परिवार, विद्यालय, संगठन के सदस्य बैठते हैं, आहुतियाँ देते हैं, अच्छी वाणी बोलते हैं, वहाँ सात्त्विकता के कारण एकता आती है। परस्पर उत्तम जगह साथ बैठने से प्रीति बढ़ती है। व्यक्ति, परिवार, संगठन सुव्यवस्थित होने से समाज सुव्यवस्थित होता है। यज्ञ से बारिश समय पर होती है, उत्तम गुणयुक्त होती, वायु शुद्ध होती है, इससे समाज को अति लाभ है। यज्ञ पर भाग लेने से धैर्य आता है, जिससे दुर्घटना आदि से बचने में सहयोग मिलता है। आधिभौतिक, आध्यात्मिक, आधिदैविक तीनों दुःखों को यज्ञ दूर करने में सहायक है। इसीलिए तो कहा है—**'यज्ञो वै वसुः'**।

प्रवेश सूचना

चरित्र निर्माण के लिए गुरुकुल की शिक्षा आवश्यक है

सभी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर गत 98वें वर्षों से निरन्तर आर्षपाठविधि के प्रचार-प्रसार में लगा हुआ है। यहाँ से शिक्षा प्राप्त करके अनेक विद्वान् राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य कर रहे हैं। इस समय गुरुकुल में सुयोग्य अध्यापक के नेतृत्व में गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारी विद्या, बल व चरित्र की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। गुरुकुल में आर्षपाठविधि के अध्ययन के साथ-साथ अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, भूगोल आदि शिक्षा की उचित व्यवस्था है तथा ब्रह्मचारियों के शारीरिक विकास के लिए मल्लयुद्ध (कुश्ती), पादकन्दुक (फुटबाल), हस्तकन्दुक (वॉलीवाल), मुक्केबाजी (बॉक्सिंग), खा-खो आदि खेलों की व्यवस्था के साथ मल्लखम्भ व योगासन, रस्सा मलखम्भ व यौगिक क्रिया का अभ्यास करवाया जाता है। आत्मरक्षा के लिए लाठी, खड्ग, शूल, परशु, छुरिका, धनुष-बाण, मुग्दर (मोगरी), शारीरिक कलाँ (जिम्नास्टिक) इत्यादि प्रशिक्षण की पूर्ण व्यवस्था है। आप सभी अपने बच्चों को विद्वान्, बलवान व चरित्रवान तथा देशभक्त बनाने के लिए गुरुकुल में अवश्य प्रवेश करवायें।

प्रवेश तिथि निम्नलिखित है—

07 अप्रैल, 2013 (रविवार) प्रातः 10 बजे
28 अप्रैल, 2013 (रविवार) प्रातः 10 बजे
26 मई, 2013 (रविवार) प्रातः 10 बजे
30 जून, 2013 (रविवार) प्रातः 10 बजे

नोट—विद्यार्थी अपने साथ दो पासपोर्ट साइज फोटो लावें।

सम्पर्क सूत्र :- **आचार्य विजयपाल,** गुरुकुल झज्जर, मो० 9416055044

यज्ञ कार्यक्रम

सृष्टि-संवत् 1,96,08, 53114 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 11 अप्रैल 2013 बृहस्पतिवार को छोटूराम बहुतकनीकी संस्था रोहतक के प्रांगण में प्रातः 7.30 बजे से 11.30 बजे तक यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

—रणवीर सिंह बल्हारा, प्रधान आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	दयानन्दमठ दीनानगर (पंजाब)	1 से 13 अप्रैल 2013
2.	आर्यसमाज हाऊसिंग बोर्ड कालोनी, पलवल	10 से 14 अप्रैल 2013
2.	आर्यसमाज घरौंडा जिला करनाल	10 से 12 मई 2013
2.	आर्यसमाज भुरथला जिला रेवाड़ी	25 से 26 मई 2013
3.	आर्यसमाज गाढ़ा जिला महेन्द्रगढ़	1 से 2 जून 2013

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

शोक समाचार

आर्यसमाज डागर पाना लीलोढ़ जिला रेवाड़ी के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री बनवारीलाल सुपुत्र श्री खेमराम का 90 वर्ष की आयु में दिनांक 26.02.2013 को स्वर्गवास हो गया। वे आर्यसमाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे तथा गुरुकुलों, गोशाला, कन्या पाठशाला आदि में बहुत दान देते थे उनके निधन से आर्यसमाज को गहरी क्षति हुई है।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

ऋषिबोधोत्सव एवं मासिक हवन-यज्ञ कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज डागर पाना लीलोढ़, जिला रेवाड़ी का मासिक हवन-यज्ञ एवं ऋषि-बोधोत्सव दिनांक 10.03.2013 को गाँव में धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम में आर्यसमाज के मंत्री रामचन्द्र वानप्रस्थी, मा० सरदारसिंह सेवानिवृत्त प्रिंसिपल बलवीरसिंह, मिस्त्री मुन्शीराम आर्य, वैद्य तुलसीराम मेहरा सिलाना (झज्जर) मा० राजेन्द्रसिंह, श्री लालसिंह आदि शामिल हुए। गांव से माता व बहनों से अपने-अपने घरों से घृतदान करके हवन-यज्ञ की शोभा बढ़ाई तथा सभी ने विश्वशान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की।

—रामचन्द्र वानप्रस्थी, मंत्री, आर्यसमाज डागर पाना लीलोढ़, जिला रेवाड़ी

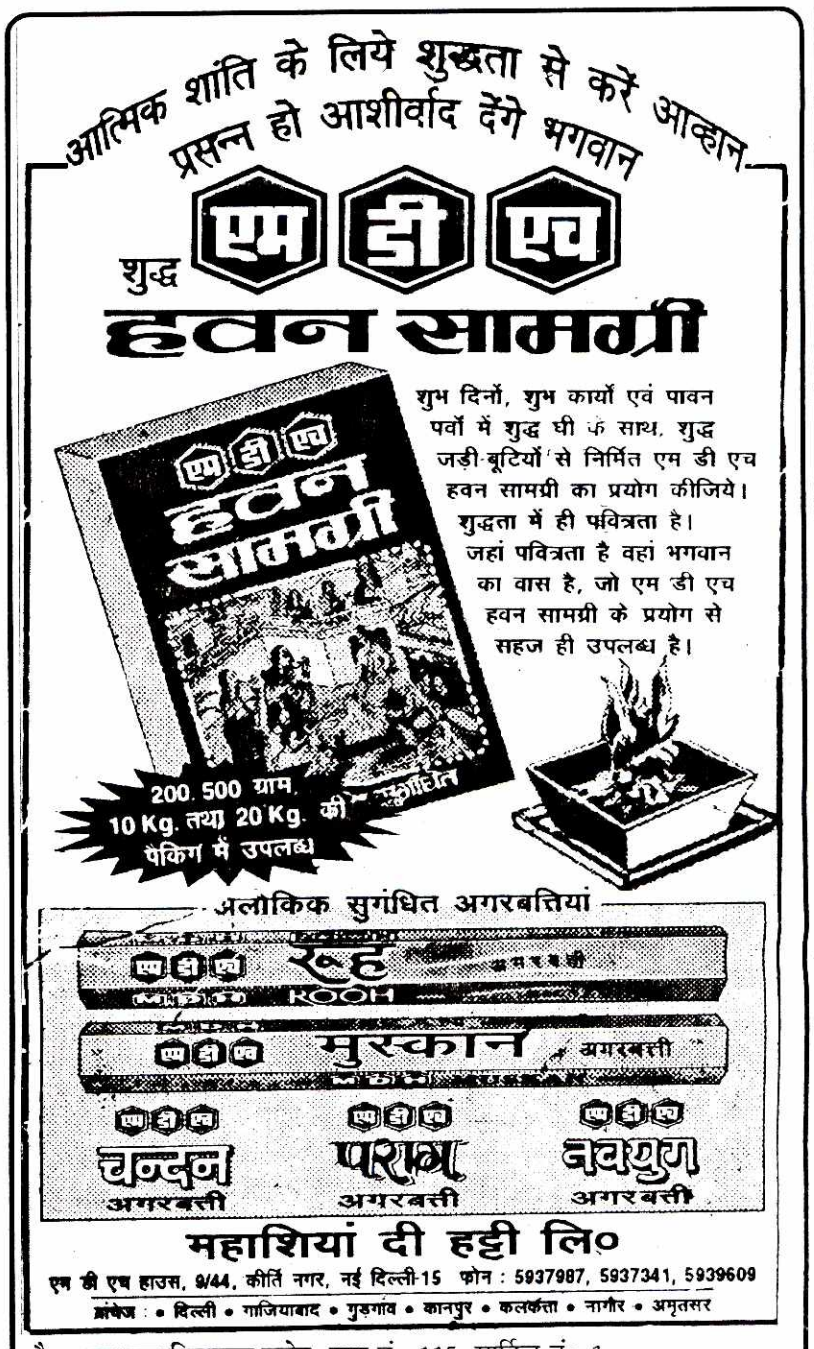

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओमप्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

आर्य-संसार

जिला हिसार में वेदप्रचार की धूम

वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार की ओर से निम्न गांव में वेदप्रचार का आयोजन वेदप्रचार मण्डल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य द्वारा किया गया। श्री स्वामी सर्वदानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास तथा सभा पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही का कई गांव में विशेष सहयोग रहा।

14 फरवरी 2013 को ग्राम चिडोद में श्री रामकुमार आर्य, श्री बलजीत आर्य का सहयोग रहा। 15 फरवरी को ग्राम खेड़ी बरकी में श्री फूलाराम नम्बरदार, बनवारी लाल सरपंच का सहयोग रहा। 16 फरवरी को ग्राम सरसोद बिचपड़ी में शमशेर व ओमप्रकाश का सहयोग रहा। 17 फरवरी को ग्राम घुड़साल, मोड़ाखेड़ा, छानीबड़ी में श्री हरिओम्, साहबराम का सहयोग रहा। 19 फरवरी को ग्राम खान बहादुर, सरेहड़ा में श्री गोपीराम, रामरतन का सहयोग रहा। 20 फरवरी को ग्राम न्योली, मात्रश्याम में श्री भीमसिंह, ओमप्रकाश का सहयोग रहा। 21 फरवरी को ग्राम बड़वा, पनिहारचक्क में श्री रामप्रताप, महेन्द्र का सहयोग रहा। 22 फरवरी को ग्राम सीसवाला, सुण्डावास में प्रेमकुमार चिरंजीलाल का सहयोग रहा। 26 फरवरी को ग्राम दुबेठा में श्री हरफूल, श्री रमेश कुमार का सहयोग रहा। 28 फरवरी को ग्राम भर्री, बाण्डा जाटान में श्री शेरसिंह, रामफल का सहयोग रहा। 28 फरवरी को ही ग्राम नलवा में श्री नरेन्द्र आर्य के घर पर पारिवारिक यज्ञ हुआ। 2 मार्च को ग्राम अग्रोहा, निंगथला में श्री मेवासिंह, श्री सीताराम का सहयोग रहा। 3 मार्च को ग्राम गोरखपुर में यज्ञ व वेदप्रचार हुआ श्री गुलाब सिंह व का० बलवीर का सहयोग रहा। 4 मार्च को ग्राम ढाणी महोबतपुर, मेहूवाला में रमेश व मेवासिंह का सहयोग रहा।

उपरोक्त गाँव में आत्मा-परमात्मा, यज्ञ के लाभ, शराबबन्दी, वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी, संस्कारों का महत्त्व, राष्ट्ररक्षा, नारी-उत्थान, अश्लीलता, धार्मिक पाखण्ड, भ्रूणहत्या, आर्यसमाज क्या है, क्या चाहता है, गोरक्षा, चरित्र-निर्माण आदि विषयों पर विचार रखे। वैदिक विद्वान् आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल आर्यनगर, डॉ० प्रमोद योगार्थी दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय का वेदप्रचार में पूर्ण सहयोग मिल रहा है।

—कर्नल ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज लाहड़पुर (यमुनानगर) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज लाहड़पुर (यमुनानगर) का वार्षिकोत्सव बड़ी धूम-धाम से 5 व 6 मार्च को सम्पन्न हो गया। इस उत्सव में स्वामी शिवानन्द सरस्वती, स्वामी करुणानन्द सरस्वती, श्री इन्द्रजित्देव, वैदिक मिशनरी व राजेशार्य शास्त्री के प्रभावशाली उपदेश कराए गए जबकि श्री रुवेलसिंह आर्यवीर व श्री कल्याण सिंह वेदी ने अपने भजनों व गीतों से श्रोताओं का कुशल मार्गदर्शन किया।

—मन्त्री, आर्यसमाज लाहड़पुर (यमुनानगर)

वैदिक सत्संग समारोह का आयोजन

आर्यसमाज गोहानामण्डी के 83वें मासिक वैदिक सत्संग समारोह का आयोजन **दिनांक 14 अप्रैल 2013, रविवार** को आर्यसमाज मन्दिर, गुढ़ा रोड, गोहाना (सोनीपत) में आयोजित किया जाएगा। इस सत्संग का आयोजन महीने के दूसरे रविवार को किया जाता है। आज संसार में भौतिक उन्नति खूब हो रही है लेकिन मानव की मानवता का ह्रास होता जा रहा है। संसार में सुख-शान्ति का वातावरण बनाने के लिए परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार अति आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आप सभी से निवेदन है कि सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सभी कार्यक्रमों के समय पर उपस्थित होकर धर्मलाभ उठाकर अनुगृहीत करें।

आमन्त्रित वैदिक विद्वान् : श्री सत्यवीर शास्त्री

मन्त्री-आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

कार्यक्रम-14 अप्रैल 2013 प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक

यज्ञ, भजन, प्रवचन।

निवेदक : आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

योग द्वारा बुढ़ापे से छुटकारा

❑ देवीसिंह आयु० चिकित्सक, म०नं० 218, सैक्टर-14, रोहतक

संयम से प्राणायाम से आसनों द्वारा, शरीर के संकोचन व शिथिलीकरण (Relaxation) से मालिश से' कोई पवित्र शौक (Hobby) से बुढ़ापा सुखमय बन सकता है। उत्तम विचारों से आनन्दमय बनायें। जिससे साथ ही समाज व राष्ट्र का भी कल्याण होगा। व्यसनों से हम बचें। फिर देखना कैसा चमत्कार होता है। योग व उत्तम सोच से बुढ़ापा दूर भगाया जा सकता है। आसनों से प्रत्येक अंग व नस-नाड़ियों में रक्तप्रवाह संचारित करने में सुविधा होती है। जो बुढ़ापे को दूर करने का मुख्य तरीका है। बच्चों द्वारा दादा कहा जाना ही काफी है कि वह जवान नहीं रहा। जब दिन में कई बार बाबा सुनने लगता है तो बुढ़ापा लाने में मदद मिलती है। बच्चों की हाँ में हाँ मिलानी पड़ती है। अकेलापन, बाल सफेद होना, झुर्रियाँ पड़ना। बुढ़ापे का बड़ा कारण रक्त संचार का कम क्रियाशील होना है। अपने प्यारे देश में सेवा हेतु अनेक अच्छे संगठन हैं, कई प्रकार की सेवाएँ हैं, धार्मिक, सामाजिक संगठन हैं। मन जितना शांत रहेगा, जीवन उतना ही दीर्घ व सुखी रहेगा। धर्म की भावनाएँ तनाव को कम करती हैं। बुढ़ापे का मुख्य कारण टूटे (Cells) कोशिकाओं की सफाई न होना व नए तन्तुओं का कम बनना है। टूटे तन्तु खून में नहीं रहने चाहियें अन्यथा कड़ापन आयेगा, लचक जितनी रहे उतना अच्छा। योगासनों से शरीर लचीला बना रहेगा। थकावट में व्यायाम ना करें। धमनियों में जमा यूरिक एसिड दवा से दूर नहीं होता। प्रकृति का उपाय है घर्षण, शरीर के अंगों में जो दूषित पदार्थ बैठे हैं, उन्हें नस-नाड़ियों व पेशियों का संकोचन करना व ढीला (शिथिलीकरण) करने से जमे दूषित पदार्थ उखड़कर निकल जायेंगे। खून की नालियाँ चौड़ी हो जायेंगी, जिससे हृदय पूरे शरीर में खून को बिना रुकावट के सब अंगों में पहुंचाता रहेगा। अब बड़े-बड़े डाक्टर भी भौतिक चिकित्सा को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। सब व्यायामों में यौगिक व्यायाम उत्तम और वैज्ञानिक माना है। इसके तीन मुख्य लाभ हैं। कभी रोग नहीं आयेगा, दूसरे धन-समय और कष्ट से बचेंगे। और अंतिम समय तक वृद्धावस्था अनुभव नहीं होगी। प्रातः उठना शौच से निवृत्त होकर जल में आधा नींबू मिलाकर पीना, खुली जगह प्राणायाम-आसन करना, स्नान से पूर्व तेल मालिश या सूखी मालिश करें (15 से 25 मिनट), भूख पर सात्त्विक भोजन, सायं को वक्त से करें। चीनी-मसाले कम से कम लें। कब्ज ना होने दें। सूर्य स्नान-गहरे-लम्बे श्वास कई बार लें। चबा-चबाकर बिना घूंटे खाना खायें। हां, थोड़ा पानी आवश्यकतानुसार बीच-बीच में ले लिया करें ताकि शीघ्र प्यास न लगे, विशेषकर गर्मी में तथा जो कठिन श्रम करते हैं। जैसे—किसान व कामगार सैनिक, खिलाड़ी, रसोइये व बस चालक आदि और पर्वत पर चढ़ने वाले आदि।

गहरी नींद लें चाहे 5 घण्टे ही हो 7 घण्टे ले सके तो अच्छा। लम्बे श्वास लेने से सौरऊर्जा मिलती है। भारतीय शास्त्रों में इसे प्राणशक्ति कहा है। घर्षण शिर में करें।

आसनों का अभ्यास मनुष्य की गुप्त शक्तियों को जाग्रत करता है। आत्मविश्वास बढ़ता है। आसन करते समय शरीर ढीला रहे। श्वसन से आरम्भ करें। तीन बार करें। शरीर व मानसिक प्रणालियों को विश्राम देता है। अपनी ताकतानुसार ही व्यायाम करें। यह लेख संकेत मात्र है।

स्थायी पता—बुआना लाखू, तह० इसराना (पानीपत)

विज्ञापन के माध्यम से दी जाने वाली सहयोग राशि

अन्दर के पृष्ठों के विज्ञापन रेट

एक पृष्ठ 5000/-, आधा पृष्ठ 2500/-, चौथाई पृष्ठ 1000/-, 1/8 पृष्ठ 500/- एवं 1/8 पृष्ठ से कम स्थान पर न्यूनतम एक बार का शुल्क 250/- रु०।

नोट—11 माह की सहयोग राशि प्राप्त होने पर धन्यवाद स्वरूप 12 माह के 48 अंकों में विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा। **'आर्य प्रतिनिधि'** साप्ताहिक प्रत्येक मास की 7,14,21, 28 तारीखों में प्रकाशित किया जाता है।

व्यवस्थापक, 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक,

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यसमाज रामनगर, रोहतक रोड, जीन्द द्वारा आयोजित

वेदप्रचार पर्व एवं शहीदी-दिवस समारोह

❑ यज्ञवीर आर्य, संयोजक शहीदी दिवस समारोह

आर्यसमाज रामनगर, रोहतक रोड, जीन्द अन्य आर्यसमाजों की तरह अपने यहाँ प्रतिवर्ष 2-3 बार वेदप्रचार के कार्यक्रम आयोजित करती रहती है। हम अमर शहीद धर्मवीर पं० लेखराम आर्य मुसाफिर के इस कथन में पूरा विश्वास रखते हैं कि ''आर्यसमाज को तहरीर और तकरीर का काम कभी शिथिल नहीं पड़ने देना चाहिये।'' हम यथा सामर्थ्य उक्त कथन के अनुसार गतिविधियाँ चलाते रहते हैं। हमने 22 से 24 मार्च की तिथियों में तीन दिवसीय प्रचार कार्यक्रम रखा जिसके लिये वक्ता रूप में आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री (सहारनपुर) को तथा भजनोपदेशक के लिये सुविख्यात भजनोपदेशक श्री प्रताप सिंह आर्य एवं अनेक सहायक श्री सुखदेव आर्य (सहारनपुर) को आमंत्रित किया गया। उक्त दोनों आमंत्रित आर्यप्रचारकों ने बहुत ही निष्ठा एवं उत्साह से वेदप्रचार के इस पावन आयोजन को सफलता पूर्वक सिरे चढ़ाया। यज्ञ करवाने में हमारे स्थानीय विद्वान् मा० देवराज आर्य का पूरा सहयोग हमें मिला। कार्यक्रम के मध्य 23 मार्च की वह ऐतिहासिक तिथि भी थी जिस दिन ठीक 82 वर्ष पूर्व देश के तीन देशभक्त सपूत (राजगुरु, सुखदेव एवं भगतसिंह) मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए सन् 1931 में हँसते-हँसते फाँसी झूल गये थे। उन अमर शहीदों को याद करना, उन्हें श्रद्धांजलि देना और उनके सपनों के भारत का निर्माण करना यह सब हमारे दायित्व के अन्तर्गत आता है। इसलिये हमने 23 मार्च 2013 (शनिवार) को रात्रि 8 बजे से 11 बज़े तक आर्यसमाज मन्दिर से बाहर सार्वजनिक स्थल, चौड़ी गली रोहतक रोड जीन्द में शहीदी दिवस का आयोजन किया जिसके लिये नगर के जाने-माने युवा चिकित्सक डॉ० दिनेश शर्मा (समारोह के अध्यक्ष), जाने माने समाजसेवी एवं भाजपा वाणिज्य प्रकोष्ठ के प्रदेशाध्यक्ष श्री लीलाधर मित्तल (समारोह के मुख्य अतिथि) 'सिमे इण्डिया' के चेयरमैन श्री सूर्या वत्स (विशिष्ट अतिथि) को आमंत्रित किया गया साथ ही गुरुकुल कालवा के वर्तमान में संचालक तपस्वी आचार्य श्री राजेन्द्र जी का भी हमें सान्निध्य प्राप्त हुआ। शहीदी समारोह में श्री हरिलाल जी आर्य 'विजय', बालक विशालार्य, बालिकायें श्रुति, तृषा एवं भावना शर्मा ने भी देशभक्ति पूर्ण गीतों के माध्यम से राजगुरु, सुखदेव एवं भगतसिंह तथा अन्य शहीदों को श्रद्धांजलि दी। भजनोपदेशक श्री प्रतापसिंह आर्य एवं विद्वान् वक्ता श्री वीरेन्द्र शास्त्री जी ने बहुत ही प्रेरणाप्रद विचार रखे तथा आह्वान किया कि हम एक भ्रष्टाचार-मुक्त, जातिवाद, क्षेत्रवाद जैसे संकीर्ण वादों से मुक्त, सबके लिए उन्नति, विकास और खुशहाली के समान अवसरों वाले राष्ट्र का निर्माण करें जो कि शहीदों का सपना था जिसके लिये वे अपनी फूल जैसी हँसती मुस्कुराती जवानी मातृभूमि पर न्यौछावर कर गये। आज के नेताओं का भ्रष्ट अनैतिक आचरण, आपाधापी, घपले, काण्ड घोटाले, देश का धन चोरी-छुपे विदेशी बैंकों में जमा करवाना आदि काली शर्मनाक करतूतों के लिये शहीदों के सपनों के भारत में कोई जगह नहीं हो सकती। हमें संकल्प करना होगा कि हम इन समस्त बुराइयों का सफाया करेंगे, शहीदों के सपनों के भारत का निर्माण करेंगे। वक्ताओं ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि अहिंसा, असहयोग, गांधीवाद का अपना स्थान और महत्त्व हो सकता है किन्तु सशस्त्र क्रांति के बिना, शहीदों के बलिदानों के बिना, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की ललकार के बिना देश को आजादी नहीं मिल सकती थी। जिसका जितना योगदान हो उसे हम कृतज्ञता पूर्वक याद करें किन्तु शहीदों की उपेक्षा करना घोर कृतघ्नता है, पाप है, अक्षम्य अपराध है।

वक्ताओं ने जोर देकर कहा कि महर्षि दयानन्द के क्रांतिकारी विचारों से प्रेरणा लेकर ही देशभक्त नौजवान यथा—पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल', चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खाँ, भगतसिंह आदि क्रांतिपथ पर आगे बढ़े और अपनी शहादत से फिरंगी को देश से बाहर खदेड़ा। बाद में सर्वश्री विशिष्ट अतिथि, मुख्य अतिथि, अध्यक्ष महोदय और आचार्य राजेन्द्र जी ने भी अपने आशीर्वाद में इन्हीं तथ्यों की पुष्टि की और दो टूक शब्दों में बताया कि—

कितनों ने गोली झेली और
कितने फांसी को झूल गये।
'संत' अहिंसा याद रहे क्यों,
सुखदेव-भगत को भूल गये॥
राजगुरु की कुर्बानी को,
इस तरह भुलाना ठीक नहीं।
चापलूसी के चक्कर में,
यूं सत्य को छुपाना ठीक नहीं॥

शहीदी समारोह में श्रोताओं की श्रद्धा और भीड़ देखते ही बनती थी। चौड़ी गली के स्थानीय निवासियों का हमें भरपूर सहयोग मिला। विशेषकर डॉ० रणवीर राठी, प्रो० दयासिंह एवं प्रवीण गोयल का। स्थानीय समाजों के पदाधिकारी एवं सदस्य/सदस्यायें जैसे सर्वश्री अभयसिंह, प्रि० अजित गौतम, मा० देवराज आर्य, सत्यनारायण आर्य, पृथ्वीसिंह मोर, मा० राजवीर आर्य, रमेशचन्द्रार्य, ईश्वरचन्द्रार्य, सूरजमल रेढू, श्रीमती जीवनी देवी, श्रीमती विनीता गुलाटी, श्रीमती संगीता तथा बाहर से मा० रायसिंह आर्य (सभा-प्रस्तोता), गुलाबसिंह आर्य (उपाध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल), मा० धर्मवीर, संजय शर्मा (मंत्री वेदप्रचार मण्डल), सभा में उपस्थित थे। घोघड़ियां, डाहौला, गुरुकुल कालवा, भागखेड़ा, मोरखी, भिड़ताना, बिरौली, किनाना, बराड़खेड़ा, सफीदों, बहबलपुर आदि गांवों से बड़ी संख्या में आर्य नर-नारी समारोह में शामिल हुये। सभा-उपप्रधान प्रो० ओमकुमार आर्य ने मञ्च-संचालन किया और बहुत ही व्यवस्थित ढंग से समारोह सम्पन्न करवाया। सबका धन्यवाद ज्ञापित किया गया, शान्तिपाठ के बाद जयकारों के साथ सभा विसर्जित हुई और प्रसाद भी वितरित किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।